26.12.67 ओमशांति रात्रीक्लास

यह ल.ना. का चित्र क्लीयर बहुत है। शिवबाबा उपर में है। वो है सबका बाप। बाप से वर्सा मिलता है। बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। स्वर्ग में राज्य है ही इन ल.ना. का। 5000वष्र पहले भी था। फिर कहां गया? बाप समझाते हैं 84पुनर्जन्म के लिए। यह ही विष्णु बनते हैं फिर 84का चक्र खाय फिर ब्रह्मा बनते हैं। दिखाते भी हैं ना कि विष्णु की नाभ से ही ब्रह्मा निकला। फिर कहेंगे कि ब्रह्मा की नाभी से विष्णु निकला। ब्रह्मा सो विष्णु। देवता बना फिर 84जन्म लेते हैं। बाप समझाते हैं कि तुम 84जन्मों को नहीं जानते हो। मैं ही आकर बताता हूं। कितना ही सहज है। बाप ब्रह्मा द्वारा ही कहते हैं कि मुझ पारलौकिक बाप को याद करो। मैं ही हूं पतित–पावन। तो तुम्हारी कट योगबल से भस्म हो जावेगी। यह है याद की यात्रा। अपने को आत्मा समझो और मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। फिर तुम ही यह बन जावेंगे। तुम अभी हो ब्राह्मण। प्रजापिता ब्रह्मा की उलाद(औलाद)। बाप ने समझाया है कि बाप ही आकर आत्माओं को ज्ञान देते हैं। आत्मा भृकुटि के बीच में रहती है। आत्मा ही अविनाशी है और शरीर विनाशी है। अब तो वापिस जाना है। इसलिए बाप कहते हैं कि अपने को आत्मा समझो और बाप को ही याद करते2 तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। जैसे ही उतरे हो वेसे ही चढ़ते भी हो। आत्मा का योग लगने से बैटरी भर जावेगी। दीवा बुझ गया है सो फिर जले कैसे? गरित चाहिए। दीवा जलाते हैं तो गरित डालते हैं। तो यह भी आत्मा पतित बनने से ठंडी हो जाती है। प्रजापिता है पतित। इनको भी इन जैसा ही बनना है। ततत्वम्। पहले तो देवता फिर क्षत्रिय फिर वैश्य और फिर शूद्र बनते हैं। तुम देवता हो तो पूज्य भी हो। सतयुग–त्रेता में पूज्य फिर पुजारी बनते हो। बाप कहते हैं कि मैं तो एवर ही पूज्य हूं। तुम ही पूज्य और पुजारी बनते हो ना। अब तुम पूज्य बन रहे हो। इस समय तुम ही बाप से वर्सा ले रहे हो सतयुग का। माया पर भी जीत पाने के लिए बल होना चाहिए। तो ऑलमाइटी से योग लगाने के लिए बल मिलता है। जो अच्छी रीत याद करेंगे तो वो ही सतोप्रधान बन जावेंगे। अगर थोड़ा योग होगा तो प्रजा में पद पावेंगे। पावन तो बनना ही है। दैवी गुण भी धारण करने हैं। काम महाशत्रु है। कहते भी हैं ना कि पतितों को पावन बनाओ। अब यह है सहज याद। कोई भी देहधारी को याद ना करना है। अपनी भी देह को याद ना करना है। कलियुग में अनेक ही धर्म हैं। वो सब धर्म का विनाश हो एक धर्म की स्थापना हो रही है। इनका एक ही राज्य था ना। हेल्थ और वेल्थ दोनों ही मिलती है। इसको ही सतयुग कहा जाता है। यह है ही कलियुग दुःखधाम। बाप कहते हैं कि चलो सुखधाम में। तुम्हारी ही हिस्ट्री और जॉग्राफी रिपीट होनी है। जब पुजारी हैं तो पूज्य कोई भी होते ही नहीं हैं। शंकराचार्य भी तो शिव की ही पूजा करता है ना। इनको पूज्य कह ना सकेंगे। तुम इनको लिख सकते हो। तुम पुजारी हो और अपने को पूज्य कह नहीं सकते हो और अपने को पूज्य कह नहीं सकते हो। पूज्य देवी–देवता होते ही सतयुग में। अब तुम हो पुजारी। रुहानी बाप ही समझाते हैं। रूह सुनता है। आत्मा ही मुख्य अविनाशी है। बाप समझाते हैं कि आत्मा एक ही है। मैं हूं शिव। मेरा शरीर नहीं है। यह भागीरथ जिसमें मैं प्रवेश करता हूं। मुझे बुलाते ही हैं कि आकर पावन बनाओ। बाप कहते हैं कि मैं तो आता ही हूं पतित शरीर में पावन बनाने लिए। अब तुम ब्राह्मण हो ना। तुम्हारा हीरो–हीरोइन का पार्ट है। जो हार खाते हो फिर जीत भी पहनते हो ना। अब जीत पहन रहे हो। द्वापर के बाद फिर हार खावेंगे। इस समय बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने के लिए। यह ज्ञान भी तुम बच्चों को ही मिलता है। तुम ही राजऋषि भी हो। राज के लिए ही तपस्या कर रहे हो ना। वो तो है हठयोग। सिखला नहीं सकते। वो तो हैं ही निवृत्तिमार्ग के। तुम प्रवृत्तिमार्ग में यह थे। फिर पतित बने हो। अब फिर पावन बनना है। यह कितना ही सहज ज्ञान है। अपने को आत्मा समझकर बेहद के बाप को याद करना है। उनको हैविनली गॉड फादर कहते हैं ना। कोई भी मनुष्य नहीं है जो रचता और रचना को जानते हों। जाने भी तब ही जबकि बाप भी अपना परिचय देवे। बाप यह शरीर लोन लेते हैं। 84का चक्र सिर्फ तुम ही खाते हो। सबसे जास्ती जन्म भी तुम्हारे होते हैं।

क्रिश्चियन्स के थोड़े जन्म होंगे ना। इनके तो हैं ही 2000वर्ष। यह नालेज है ना। एम ऑब्जेक्ट है ही नर से नारायण बनने की कथा। हर 5000वर्ष के बाद तुम बाप से ही सुनते हो ना। तुम सब इस समय अमर कथा सुन रही हो। अमरकथा शिवबाबा ही सुनाते हैं। सत्य नारायण की कथा भी बाप ही सुनाते हैं। कहा भी जाता है ना कि सुप्रीम बाप ,सुप्रीम टीचर,सुप्रीम सतगुरू। देवी–देवताओं का धर्म ही उंच ते उंच है। मुख्य तो है ही पवित्रता। इस पर ही अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। बाप कहते हैं कि यह अंतिम जन्म नगन नहीं होना है। भक्ति तो है दुर्गति मार्ग। सदगति होती है ज्ञान से। ज्ञान है सदगति मार्ग और भक्ति है ही दुर्गति मार्ग। अब हम तो जावेंगे ही अपने घर। बाकी तो सब ही खतम हो जावेंगे। तुम्हारा है ही योगबल। जैसे तुम विश्व के मालिक बनते हो। आसुरी बल से ही विनाश होता है। तुम ही डबल अहिंसक बनते हो। अब तुम बच्चों को शांतिधाम और सुखधाम को याद करना है ना। बाकी और सब कुछ ही भूल जाना है। पढ़ाई बहुत सहज है ना। सेकेंड में ही जीवनमुक्ति होती है। बाप के बने तो समझो कि वर्से के भी हकदार बने ; परंतु नम्बरवार पद तो बहुत हैं ना। बाप कहते हैं कि अब तुमको वापिस जाना है। देह का अहंकार भी छोड़ना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। कट उतरे तो फिर कशिश भी होवे ना। कट उतरे तो तब ही कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। तो फिर पास अवस्था ही ऑनर होगी। नहीं तो फेल हो जावेंगे तो चंद्रवंशी में जाना पड़ेगा। उनको क्षत्रिय धर्म कहा जाता है ना। थोड़ा भी ज्ञान सुना हुआ है तो स्वर्ग में जरूर आवेंगे। फिर पढ़ाई में लग जावें तो पास भी हो सकते हैं। पिछाड़ी वाले पहले से उंच पद पार रहे हैं। रात–दिन मेहनत करें तो बहुत ही आगे जा सकते हैं। बाप की श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ बन सकते हैं ना। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप वा दादा का दिल जान सिक वा प्रेम से यादप्यार और गुडनाइट। मीठे2 बच्चों को रुहानी बाप की अर्थ सहित नमस्ते।